पाठ- 2 : रैदास

मूल भाव- रैदास एक प्रमुख संत कवि तथा कबीर के समकालीन थे और उन्होंने : प्रेम और भाईचारे का सन्देश दिया; समाज की कुरीतियों को दूर कर सामूहिक जन-चेतना को जागृत कर, धार्मिक आडंबर वादियों के प्रति क्षमा-भाव व्यक्त किया तथा दिव्य-दृष्टि से समय और समाज की आवश्यक माँगों की पहचान कर भक्ति-भाव की रचनाएं लिखों। इस पाठ में तीन पद और तीन दोहे।

- सरल व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, उर्दू-फारसी आदि शब्दों का मिश्रण

मुख्य बिंदु : पदों की विषयवस्तु

तुम्हारी दृष्टि सर्वव्यापी है किंतु मैं तुम्हें नहीं देख सकता क्योंकि तुम्हारा कोई रूप नहीं है तो भला, प्रीति कैसे हो? मति भ्रमित हो जाती है, प्रीति नहीं कर पा रहा हूँ।

तुम्हारे में गुण ही गुण हैं और मुझ जैसे माया-मोह में फँसे जीव में अवगुण ही अवगुण भरे हैं इसलिए सदैव अपने-पराए, हमारे-तुम्हारे की माया में फँसा रहता हूँ। मैं अब उस द्वंद्व से कैसे छुटकारा पाऊँ?

ईश्वर की दृष्टि में सच्चा भक्त या ईश्वर का प्रिय व्यक्ति वही है जो पुण्यात्मा है, अच्छे कर्म करने वाला है और सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करता है।

व्यक्ति किसी भी वर्ग अथवा जाति का क्यों न हो यदि वह सच्चे मन और पवित्र भाव से भगवान का भजन करे, तो उसे स्वयं तो मुक्ति मिलती ही है साथ ही उसके दोनों कुल (माता-पिता) मुक्ति पा जाते हैं। धन्य है वह धरती, धन्य है वह स्थान, धन्य हैं उस परिवार के लोग, जिसमें एक सच्चा भक्त जन्म लेता है।

जिन भक्तों ने ईश्वर प्रेम रूपी रस का पान कर लिया है, उन्हें सांसारिक रस में कोई आनंद नहीं आता। वे तो अपने प्रेम रूपी रस में ही मगन रहते हैं| सांसारिक माया रूपी विषाक्त आकर्षणों को खोई के समान फेंक देते हैं।

मनुष्य को भी जल में कमल के पत्ते के समान संसार से निरपेक्ष रह कर भक्ति में लीन रहना चाहिए।

कवि प्रभु के समक्ष स्वयं को समर्पित करता हुआ ईश्वर को चंदन और स्वयं को पानी की उपमा देता है। चंदन की सुगंध भक्त के शरीर के अंग-प्रत्यंग में व्याप्त है।

इसी भाँति ईश्वर बादल, चाँद, दीपक और मोती के उदाहरण प्रस्तुत किया गए हैं। भक्त ने स्वयं को क्रमशः मोर, चकोर, बाती और धागा के रूप में व्यक्त किया है। उन सबकी तुलना करते हुए कवि ने भक्त और भगवान के अन्यतम संबंधों का सुंदर चित्रण कि है।

दोहों के मुख्य विषय

संसार में केवल ईश्वर-भक्ति ही ऐसी अमूल्य वस्तु है कि उसके सामने सभी सांसारिक वस्तुएँ फीकी हैं। मानव शरीर के माध्यम से ही अधिक-से-अधिक भक्ति की जा सकती है और ईश्वर के निकट पहुँचा जा सकता है, मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

भक्ति साधना की उच्चतम स्थिति वह है, जहाँ भक्त ब्रह्म को पहचान कर उसमें एकाकार हो जाने का अनुभव करने लगता है और तब वह सांसारिक आकर्षणों से बहुत दूर चला जाता है।

माया-मोह से घिरा हुआ व्यक्ति घृणा का पात्र होता है। उसका निवास भी नर्क के समान प्रतीत होता है। किंतु यदि इसी व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पैदा हो जाए, उसके ज्ञान-चक्षु खुल जाएँ, वह ईश्वर को पहचान ले, तो वह सच्चा भक्त कहला सकता है।

यह जानना जरूरी है महत्वपूर्ण व्याकरण बिंदु

उपमा तथा रूपक अलंकार

- जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे, किसी सुंदर स्त्री के मुख की तुलना चंद्रमा से की जाए, तो वहाँ पर उपमा अलंकार होता है। इसमें जिस वस्तु की तुलना (स्त्री का मुख) की जाती है, उसे 'उपमेय' तथा जिस वस्तु से (चंद्रमा) तुलना की जाती है, उसे 'उपमान' कहते हैं।
- किंतु यदि यहीं पर स्त्री के मुख की तुलना किसी ऐसी वस्तु से की जाती कि मुख और उस वस्तु में भेदकर नामुश्किल हो जाता है, तब यहाँ रूपक अलंकार होता क्योंकि जहाँ पर उपमेय और उपमान में आरोप दिखाई देता है, वहाँ पर रूपक अलंकार होता है। जैसे-इसी पाठ के दूसरे पद में 'बिखु खोई' में रूपक है।

दृष्टांत अलंकार

जहाँ पर उपमेय तथा उपमान में बिंब-प्रतिबिंब का भाव झलकता हो, वहाँ पर दृष्टांत अलंकार होता है। "कान्हा कृपा कटाक्ष की करै कामना दास। चातक चित में चेत ज्यों स्वाति बूँद की आस।" इसमें कृष्ण की आँखों की तुलना स्वाति नक्षत्र के पानी से तथा सेवक अथवा भक्त की तुलना चातक पक्षी से की जाती है। यहाँ दृष्टांत अलंकार होगा, क्योंकि तुलना उदाहरण देते हुए की गई है अर्थात दृष्टांत के साथ की गई है।

सराहना

रैदास द्वारा रचित पदों और दोहों में भक्ति रस का माधुर्य भाव भरा हुआ है, जिन्हें सस्वर गाया जा सकता है।

- रैदास के पद और दोहे भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं। इनमें सदैव इस बात पर बल दिया कि किसी भी कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता। सच्ची भक्ति मात्र से मानव उच्च श्रेयस्कर पद प्राप्त कर सकता है।
- ईश्वर-भक्ति ही सच्ची भक्ति है, जब भक्त और ईश्वर में कोई भेद नहीं रह जाता तब ही मनुष्य की भक्ति सार्थक सिद्ध होती है।
- भक्त और भगवान के संबंध को कवि रैदास ने अलग-अलग ढंग से स्पष्ट करने की चेष्टा की है, जैसे- चंदन-पानी, घन-मोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, चाँद-चकोर, सोना-सुहागा आदि।
- रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। जिसमें यत्रा-तत्र अवधी की शब्दावली भी है। वैसे आपने जगह-जगह अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है।
- रैदास ने काव्य की रचना पदों और दोहों के रूप में की। दोहे में दो-दो चरणों के दो-दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा सम चरणों अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

अपना मूल्यांकन करें

रैदास के काव्य की भाषागत विशेषताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

रैदास के पदों की भावगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

वर्तमान में रैदास के विचारों को आप कितना प्रासंगिक मानते हैं? स्पष्ट कीजिए।